कालिदास की कृतियाँ

महाकवि की रचनाओं की संख्या भी विवादग्रस्त है। इनके नाम से पायी जाने वाली रचनाओं की संख्या ४० से भी अधिक है। इनमें प्रमुख ये हैं—

(१) ऋतुसंहार, (२) मेघदूत, (३) कुमारसम्भव, (४) रघुवंश, (५) मालविकाग्निमित्र, (६) विक्रमोर्वशीय, (७) अभिज्ञानशाकुन्तल, (८) कुन्तलेश्वरदौत्य, (९) घटकर्परकाव्य, (१०) राक्षस काव्य, (११) दुर्घट काव्य, (१२) नलोदय, (१३) श्रुत बोध, (१४) वृन्दावन काव्य, (१५) विद्वद्विनोद काव्य, (१६) पुष्पवाणविलास, (१७) नवरत्नमाला, (१८) ज्योतिर्विदाभरण, (१९) अम्बास्तव, (२०) कालीस्तोत्र (२१) गंगाष्टक, (२२) चण्डिकादण्डक, (२३) श्यामलादण्डक, (२४) मकरन्दस्तव, (२५) लक्ष्मीस्तव, (२६) लघुस्तव, (२७) कल्याणस्तव, (२८) शृङ्गारसार, (२९) शृङ्गारतिलक, (३०) सेतुबन्ध।

इस प्रकार इनके नाम से अनेक रचनायें प्रसिद्ध हैं, किन्तु प्रमाणिक रूप से इनकी सात रचनायें ही मानी जाती हैं। इनका वर्गीकरण हम निम्नवत् करते हैं—

(अ) गीतिकाव्य— (१) ऋतुसंहार, (२) मेघदूत।
(ब) महाकाव्य— (३) कुमारसंभव, (४) रघुवंश।
(स) नाटक— (५) मालविकाग्निमित्रम, (६) विक्रमोर्वशीयम्, (७) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

इन रचनाओं का क्रमशः परिचय संक्षेप में निम्नवत् है—

१. ऋतुसंहार— यह छः सर्गों में उपनिबद्ध १४४ पद्यों का गीतिकाव्य है। इसमें यथाक्रम षड् ऋतुओं का वर्णन किया है। महाकवि की यह रचना प्राथमिक मानी जाती है। कारण– इसमें कलात्मक प्रौढ़ि का सर्वत्र अभाव है। कुछ विद्वान् इसे कालिदास-कृत मानते ही नहीं। उनके अनुसार प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने कालिदास के समस्त ग्रंथों पर टीका की किन्तु इसकी टीका नहीं की। दूसरे अलंकार ग्रंथों में इससे कोई उदाहरण नहीं लिया गया। किन्तु यह मत सर्वमान्य नहीं है।

२. मेघदूत— कालिदास-विरचित, साहित्य जगत् में प्रसिद्धि-प्राप्त मेघदूत विश्वविश्रुत काव्य है। लौकिक साहित्य में इसे सर्वोत्कृष्ट स्थान मिला है। ये दो भागों में विभक्त है– (१) पूर्वमेघ, (२) उत्तरमेघ। इसका विशेष विवरण आगे देखिए।

३. कुमारसम्भव— यह महाकाव्य १७ सर्गों में विभाजित किया गया है। इसके नायक स्वामी कार्तिकेय हैं। कुछ लोग इसे ८ सर्गों तक ही कालिदास कृत मानते हैं। पश्चात् किसी परवर्ती कवि ने उनके नाम से ही शेष सर्गों की रचना की।

४. रघुवंश— रघुवंश समग्र संस्कृत-वाङ्मय का सर्वोत्तम रत्न है। इसमें १९ सर्ग हैं जिनमें राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक के इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं का प्रभावोत्पादक वर्णन प्राप्त होता है। प्रथम से लेकर नवम् सर्ग तक दिलीप, अज, रघु, तथा दशरथ का वर्णन है। १० से १५ सर्गों में भगवान् राम का चरित्र-चित्रण तथा १६ से १९ सर्गों में राम के अन्यान्य वंशजों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है।

५. मालविकाग्निमित्र— ऐसा प्रतीत होता है कि यह महाकवि की द्वितीय रचना है। अथवा यों कहा जाय कि नाटकों में यह प्रथम नाटक है। इसमें ५ अङ्क हैं जिनमें विदिशा-नरेश अग्निमित्र तथा मालविका का प्रणय वर्णित है।

६. **विक्रमोर्वशीय**— यह नाटक पाँच अङ्कों में विभक्त है। इसमें राजा पुरूरवा तथा अप्सरा उर्वशी की प्रणय कथा का निरूपण है।

७. **अभिज्ञानशाकुन्तल**— सात अङ्कों में विभाजित इस नाटक से कोई भी पाठक अपरिचित नहीं। यह नाटक संस्कृत साहित्य का ही क्या, विश्व-साहित्य का समुज्जवल रत्न है। इसमें मेनका तथा विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला, जिसे महर्षि कण्व ने पाला था तथा राजा दुष्यन्त की प्रणय कथा को लेकर नाटक की